ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 44, अंक 23 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 26 अप्रैल, 2021 से रविवार 2 मई, 2021
विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122
दयानन्दाब्द : 198 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

शोक! शोक!! महाशोक!!! आर्य जगत में छाया महाशोक!!!! शोक!!! शोक!! महाशोक!

लाखों लोगों की महामारी से मृत्यु की सूचनाओं ने विश्व को झकझौरा
सीमित संसाधनों में संयम से काम लेने से ही हो सकता है निराकरण

मृतकों की आत्मिक शान्ति एवं कोरोना के शीघ्र समाप्त होने की प्रार्थना व कामना हेतु 3 मई, 2021 को प्रात: 9 बजे प्रत्येक आर्य अपने स्थान पर करें रोगनिवारण यज्ञ

जैसा कि आप सभी जानते ही हैं कि भारत में कोरानो का प्रभाव दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। प्रतिदिन 4 लाख से अधिक लोग कोरोना संक्रमण से प्रभावित हो रहे हैं और आंकड़ों के मुताबिक लगभग 4 हजार लोग प्रतिदिन इस महामारी की भेंट चढ़ रहे हैं। ऐसे में आर्यसमाज की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर भारत ही नहीं विश्व के 32 देशों में एक साथ एक ही समय - सोमवार 3 मई, 2021 को प्रात: 9 बजे मृतकों की आत्मा की शान्ति के लिए एवं कोरोना वायरस के प्रभाव को कम करने के लिए अनेक जड़ी बूटियों और औषधियों से युक्त हवन सामग्री रोग निवारण यज्ञ का आयोजन किया जाएगा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने जानकारी देते हुए बताया कि गत वर्ष भी आर्यसमाज के आह्वान पर विश्व स्तर पर लाखों लोगों द्वारा एक साथ 3 मई को ही रोग निवारण यज्ञ का आयोजन किया गया था, जिससे विश्व स्तर पर कोरोना वायरस के प्रभाव में कमी देखने को मिली थी। उन्होंने भारत ही नहीं समस्त विश्व के नागरिकों, आर्यजनों, आर्य संस्थाओं, आर्य प्रतिष्ठानों, आर्यसमाजों, गुरुकुलों,

- शेष पृष्ठ 6 पर

आर्य जगत के विद्वान, भजनोपदेशकों, संन्यासियों, कार्यकर्त्ताओं, प्रचारकों से सुरिक्षत रहने का निवेदन

★ सभी अपनी आवाजाही पर नियन्त्रण रखें। अभी अपने स्थान से बाहर जाने का कार्यक्रम न बनाएं।★ अपने साथ सैनेटाइजर रखें एवं मास्क का प्रयोग करें। ★ परिवारों में औषधी युक्त हवन सामग्री से यज्ञ करें। ★ नमस्ते करें - हाथ मिलाने की आदत को तिलांजलि दें।★अपने हर कार्य के उपरान्त साबुन से हाथ अवश्य धोएं। ★अपने आस-पास के लोगों का ध्यान रखें कि कोई अस्वस्थ व्यक्ति न हो। ★ यदि हो तो उसे अस्पताल/ डॉक्टरं के पास जाने के लिए प्रेरित करें।

- प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

जितना सम्भव हो सके आर्यसमाज के विद्वानों, भजनीकों, संन्यासियों का सहयोग करें प्रान्तीय सभाएं - सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्व. सभा

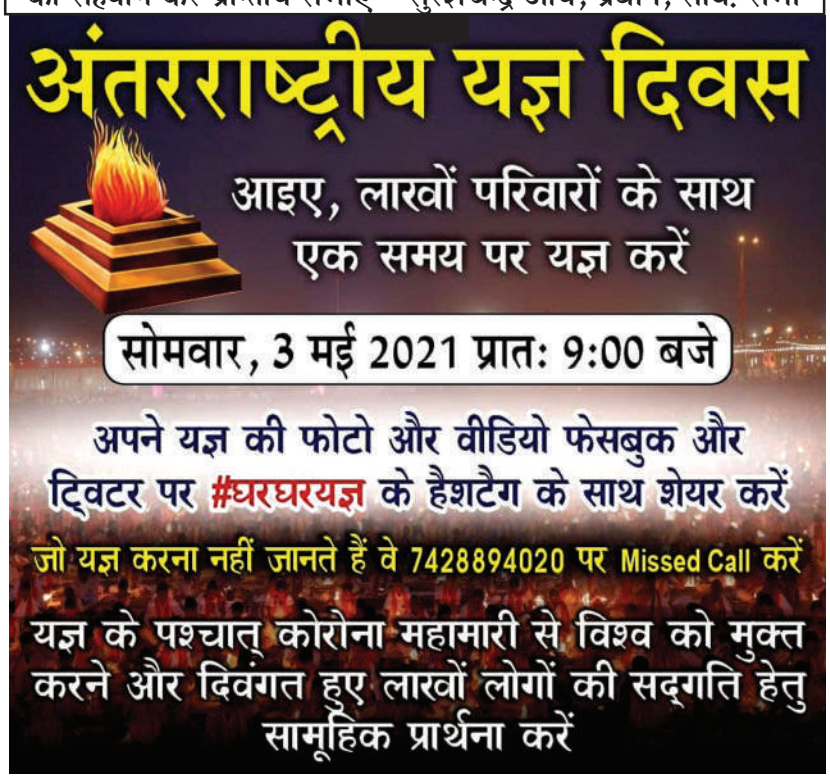

कोरोना आपदा काल में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्णय

★ औचन्दी में संचालित दीवानचन्द स्मारक गोकुलचन्द आर्य धर्मार्थ हॉस्पीटल के इंफ्रास्ट्रक्चर को और मजबूत किया जाएगा।
★ ऑक्सीजन सिलेंडर बैंक बनाया जाएगा।
★ ऑक्सीजन कंसिंस्ट्रेटर बैंक बनेगा।

एक ऑक्सीजन कंसिंस्ट्रेटर की कीमत 50 से 70 हजार रुपये है। यह ऑक्सीजन बैंक इस विपदा में मानव सेवा का सबसे जरूरी आधार बन सकता है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य जगत से सहयोग की अपील करती है। समस्त दानी महानुभावों से निवेदन है कि अधिकाधिक सहयोग प्रदान करें। अपनी दान राशि नकद/चैक/ड्राफ्ट के माध्यम से निम्नांकित बैंक खाते में जमा करा सकते हैं -

Delhi Arya Pratinidhi Sabha
A/c No. 910010001816166
IFSC Code : UTIB0000223
Axis Bank Karol Bagh

आप पेटीएम, फोनपे, गूगल पे, भीम पे, मास्टर, वीजा/ रुपे से भी QR कोड स्कैन करके दान कर सकते हैं।

कृपया दान राशि जमा करते ही अपनी डिपोजिट स्लिप/मैसेज मो.नं. 9540040388 पर व्हाट्सएप्प कर दें, जिससे आपको आपके दिए गए सहयोग रसीद यथाशीघ्र भेजी जा सके। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।** - *महामन्त्री, 9958174441*

कोरोना संक्रमितों एवं सामान्य लोगों के अन्तिम संस्कार हेतु आर्य समाज एवं आर्य वीर दल दिल्ली द्वारा
शमशान घाटों पर नि:शुल्क हवन समग्री वितरण एवं परिजनों के लिए पीने के पानी की सेवा

एम.डी.एच. परिवार के विशेष सहयोग से की जा रही है सेवा

आर्यसमाज पहुंचा रहा है कोरोना संक्रमितों के घर भोजन

कोरोना महामारी के संक्रमण से हो रही मृत्यु जिस प्रकार सभी जगह अपना विनाश तांडव कर रही है, आप सभी परिचित हैं, ऐसे में आर्य समाज और आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश ने जिस परोपकार की भावना से स्व-समर्पण की सेवा का बीडा उठाया है।

- विस्तृत समाचार एवं सम्बन्धित चित्र पृष्ठ 4 पर

देववाणी - संस्कृत **वेद-स्वाध्याय**

उत्तम गुण मुझमें आएं

यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि।
इमं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्यमानाः।। अथर्व० 2/35/5
ऋषिः **अङ्गिराः।।** देवता : **विश्वकर्मा।।** छन्दः **भुरिक्त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **यज्ञस्य**= मनुष्य-जीवन-यज्ञ के **प्रभृतिः**= भरण-पोषण का साधन **चक्षुः**=दर्शनशक्ति है **मुखं च**=और मुख भी है। **वाचा श्रोत्रेण मनसा**=वाणी से, कान से और मन से **जुहोमि**=मैं हवन ही करता हूँ। **इमम् यज्ञम्**=यह मेरा जीवन-यज्ञ **विश्वकर्मणा**= जगद्रचयितापरमात्मा ने **विततम्**=विस्तृत किया है, इसमें **देवाः**=सब देव, दिव्यभाव **सुमनस्यमानाः** = प्रसन्न होते हुए **आ यन्तु**=आएँ।

विनय - मेरे जीवन-यज्ञ का भरण-पोषण करनेवाली मेरी दर्शनशक्ति है। इससे नित्य नया सत्यज्ञान पाता हुआ मेरा मनुष्य-जीवन उन्नत होता जा रहा है। इस यज्ञ का साधनभूत जो मेरा स्थूल शरीर है, उसका भरण-पोषण मुँह द्वारा अन्न ग्रहण करने से हो रहा है, पर मेरा यह सब मानसिक और शारीरिक पोषण यज्ञ के लिए ही है। मैं उन्नत हुए मन से, शरीर से, इन्द्रियों से जो कुछ करता हूँ वह सब हवन ही करता हूँ। वाणी से जो बोलता हूँ वह हवन ही करता हूँ; ऐसा कुछ नहीं बोलता जो प्रभु को साक्षी रखकर नहीं होता, जोकि अन्यों का हितकर नहीं होता। कानों से जो सुनता हूँ वह प्रभु-अर्पण-बुद्धि से सुनता हूँ; वह श्रेष्ठ पवित्र ही श्रवण करता हूँ, जो फलतः सर्वभूतहित के लिए हो। इसी प्रकार मन के भी एक-एक मनन-चिन्तन को ऐसा पवित्र, निर्विकार, हवनरूप करने का यत्न करता हूँ। मैं सदा स्मरण रखता हूँ कि यह मनुष्य-जीवन मुझे विश्वकर्मा प्रभु ने यज्ञ रूप करके दिया है। मुझे यह ध्यान रहता है कि यह जीवन यज्ञ उस प्रभु का आरम्भ किया हुआ, चलाया हुआ है। जिस यज्ञस्वरूप ने यह सब विश्व-ब्रह्माण्ड रचा है, उसी विश्वकर्मा ने अपने इस विश्व में मेरा यह छोटा-सा जीवनयज्ञ भी शतवर्ष तक चलने के लिए प्रारम्भ किया है। यही विचार है जो मुझे अपने एक-एक कर्म को संयमपूर्ण, पवित्र और त्यागमय बनाने को प्रेरित करता है। मैं सचिन्त और सावधान रहता हूँ कि कहीं यह विश्वकर्मा का विस्तृत किया हुआ पवित्र यज्ञ मेरे किसी कर्म से कभी भ्रष्ट न हो जाए। इसलिए, हे देवो! प्रभु के संसार-यज्ञ को चलाने वाली दिव्य शक्तियो! तुम मेरे इस यज्ञ में भी प्रसन्नचित्त होकर आओ और इसे अधिक-अधिक यज्ञिय, पवित्र बनाओ। तुम्हारा तो कार्य ही यज्ञ में आना है, अतः हे दिव्य गुणो! तुम मुझमें आओ, प्रसन्नचित्त होकर आओ। मैं अपने जीवन को यज्ञ बनाता हुआ तुम्हें बुला रहा हूँ, अतः हे यज्ञप्रिय दैवभावो! तुम प्रसन्नतापूर्वक मुझमें वास करो। देवों के सब गुण, सब देवभाव, सब देवत्व मुझमें आ जाएँ, स्वभावतः मुझमें आ जाएँ, मुझमें बस जाएँ।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

भारत में दिन प्रतिदिन कोराना के बढ़ते मामलों के विभिन्न पक्षों पर चर्चा

कोरोना तांडव ! आखिर गलती किसकी ?

कोरोना वायरस के कारण लगातार मौतों से देश में त्राहिमाम मचा हुआ है। सुनने में आ रहा है कि संक्रमित व्यक्ति को पहले अस्पताल नहीं मिलता, अस्पताल मिल जाता है तो उसमें उपचार लायक ऑक्सीजन नहीं मिल पा रही है। इसके बाद जब व्यक्ति की मौत हो जाती है तो शमशान घाट नहीं मिलता। यानि शमशान में भी लम्बी-लम्बी कतारें लगी हैं। लाशों का ये अम्बार देखकर समझ नहीं आ रहा कि देश में ऑक्सीजन की कमी है या समझदारी की ?

समझदारी में भी राजनितिक समझदारी की कमी है या सामाजिक समझदारी की ? क्योंकि हम तो उस देश के वासी हैं जहाँ घर-घर ये कहावत गूंजती है कि 'यथा राजा तथा प्रजा' अर्थात जैसा राजा होगा वैसी प्रजा होगी। पिछले वर्ष जनवरी-फरवरी माह में कोरोना का पहला मामला देश में आया था। इसके बाद देखते-देखते मार्च तक संक्रमितों की संख्या बढ़ने लगी। तब मूलभूत चिकित्सीय संशाधनों की कमी को देखते हुए प्रधानमंत्री जी के आदेश पर देश में लॉकडाउन लगा दिया गया। मसलन सब घर में रहे कोई बाहर ना निकले। ये एक ऐसा आदेश था जिसे सभी ने स्वीकार भी किया। क्या सत्ता, क्या विपक्ष। जनता को तो प्रधानमंत्री जी ने कहा बर्तन बजाओं पूरे देश ने बजाये, इसके बाद कहा दीपक जलाओं समूचे देश ने वो भी किया।

आज इन बातों को एक साल से ऊपर गुजर गया। जिन लोगों के पास दवा के पैसे थे, उन्होंने दवा से काम चलाया। जो गरीब थे उन्होंने अंधविश्वास, पूजा, श्रद्धा आस्था के सहारे दिन काटे। खैर धीरे-धीरे कई महीने गुजर जाने के बाद राहत मिली। डरे सहमे लोग घर से निकले, कुछ के रोजगार छूट चुके थे तो कुछ को आधी सेलरी में काम करना पड़ा। अंतर्राष्ट्रीय आपदा थी सबने स्वीकार भी की। अब क्या हम इसे सामाजिक समझदारी की कमी कह सकते हैं? शायद नहीं क्योंकि एक अरब तीस करोड़ लोगों ने वह किया जैसा सरकार का आदेश था।

अब ढील मिली, देश में काम-धंधे शुरू हुए, सितंबर 2020 तक भारत में कोविड-19 संक्रमण के मामले धीरे-धीरे ही सही मगर कम होने लगे थे। उन दिनों यह दर प्रतिदिन दिन 93 हजार के स्तर पर पहुँच गई थी। लेकिन इसके बाद इसमें तेज गिरावट देखने को मिली।

प्रधानमंत्री जी का आदेश था कि कोरोना महामारी के मद्देनजर वे त्यौहार के सीजन में किसी तरह की लापरवाही न बरतें। उन्होंने लोगों से मास्क पहनने और सामाजिक दूरी का पालन जारी रखने के लिए कहा लेकिन, ऐसा लगा कि शायद उनका यह संदेश उनकी पार्टी के नेताओं और बिहार के लोगों तक नहीं पहुंचा। क्योंकि बिहार में विधानसभा चुनावों में पहले चरण की वोटिंग 28 अक्तूबर को होने वाली थी। चुनाव प्रचार के लिए बिहार में बड़ी-बड़ी राजनीतिक रैलियां हो रही थी और इन रैलियों में लोगों की भारी भीड़ भी उमड़ रही थी। भारतीय जनता पार्टी समेत चुनावी अखाड़े में उतर रही सभी पार्टियों ने प्रचार अभियान तेज कर दिया। अपने ही सन्देश को अनसुना करते हुए स्वयं प्रधानमंत्री जी ने भी 12 रैलियां कर डालीं। इन रैलियों में शामिल हो रही भीड़ में गले में गमछे खूब दिखाई दिए लेकिन शायद ही कोई उनसे मुंह ढक रहा था या मास्क पहनता दिख रहा था। हालाँकि इस पर काफी वाद-विवाद भी हुआ लेकिन सवाल उठाने वालों को विपक्षी या काफी चलन में चल रहे शब्द देशद्रोही कहकर निपटा दिया गया।

इसके बाद हमने वैक्सीन का निर्माण भी किया और भारत कोरोना से लड़ने वाले देशों की सूची में अग्रणी स्थान तक पा गया। हाँ इस साल मार्च की शुरुआत में स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन ने जरूर एलान किया था कि भारत में कोविड-19 महामारी अब खात्मे की ओर बढ़ रहा है। स्वास्थ्य मंत्री ने इस एलान के साथ ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के

.....बिहार में विधानसभा चुनावों में पहले चरण की वोटिंग 28 अक्तूबर को होने वाली थी। चुनाव प्रचार के लिए बिहार में बड़ी-बड़ी राजनीतिक रैलियां हो रही थी और इन रैलियों में लोगों की भारी भीड़ भी उमड़ रही थी। भारतीय जनता पार्टी समेत चुनावी अखाड़े में उतर रही रही सभी पार्टियों ने प्रचार अभियान तेज कर दिया। अपने ही सन्देश को अनसुना करते हुए स्वयं प्रधानमंत्री जी ने भी 12 रैलियां कर डालीं। इन रैलियों में शामिल हो रही भीड़ में गले में गमछे खूब दिखाई दिए लेकिन शायद ही कोई उनसे मुंह ढक रहा था या मास्क पहनता दिख रहा था। हालाँकि इस पर काफी वाद-विवाद भी हुआ लेकिन सवाल उठाने वालों को विपक्षी या काफी चलन में चल रहे शब्द देशद्रोही कहकर निपटा दिया गया।.....

नेतृत्व की तारीफ करते हुए कहा था कि उन्होंने दुनिया के सामने अंतरराष्ट्रीय सहयोग की एक नजीर पेश की है। भारत ने जनवरी से ही अपनी बहुप्रचारित वैक्सीन डिप्लोमेसी के तहत दूसरे देशों को वैक्सीन की सप्लाई शुरू कर दी थी। फरवरी के मध्य तक हर दिन सिर्फ 11 हजार मामले आ रहे थे। हर दिन मरने वालों मृतकों का साप्ताहिक औसत भी घटकर 100 के नीचे पहुँच गया था। राजनेताओं से लेकर नीति-निर्माताओं और मीडिया के एक हिस्से ने सचमुच यह मान लिया था कि भारत अब इस मुश्किल दौर से निकल चुका है। यहाँ तक दिसंबर में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के अधिकारियों ने भी कहा था कि भारत अब कोरोना संक्रमण के खात्मे की ओर बढ़ रहा है और भारतीय अर्थव्यवस्था अब जाड़े के मौसम की लंबी छाया से निकल कर चमचमाते रोशन दिनों की ओर बढ़ रही है।

उस दौरान पीएम नरेंद्र मोदी को वैक्सीन गुरु तक कहा गया। फरवरी के आखिर में चुनाव आयोग ने पाँच राज्यों में विधानसभा चुनावों का ऐलान कर दिया। इन राज्यों की 824 सीटों पर खड़े उम्मीदवारों को चुनने वाले वोटरों की संख्या 18.60 करोड़ है। 27 मार्च से शुरू हुई वोटिंग को एक महीने से भी अधिक समय तक चलना था। पश्चिम बंगाल में आठ चरणों में चुनाव का एलान किया गया, जबकि ये काम तीन चरणों में भी निपट सकता था, पर नहीं। इसके बाद चुनाव प्रचार पूरे जोर-शोर से शुरू हो गए।

इस बीच, मध्य मार्च में गुजरात के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में भारत और इंग्लैंड के बीच दो अंतरराष्ट्रीय एक दिवसीय मैचों को देखने के लिए एक लाख 30 हजार दर्शकों को इजाजत दे दी गई। इनमें से ज्यादातर बगैर मास्क पहने आए थे। इसके अलावा हरिद्वार में कुम्भ मेले की स्वीकृति भी प्रदान कर दी गयी इसमें भी करीब 31 लाख श्रद्धालुओं का विशाल जमघट देखने को मिला। *- शेष पृष्ठ 6 पर*

सार्वदेशिक सभा द्वारा घोषित यज्ञ दिवस (3 मई) पर विशेष

कोरोना रोग निवारण हेतु एक साथ करें यज्ञ

गत वर्ष जब कोरोना महामारी अपने विकराल रूप से लोगों को काल के गाल में संमाने के लिए बेबस कर रही थी, उस समय भी आर्य समाज ने एक तरफ तो राशन वितरण, भोजन वितरण और अनेक अन्य सहयोगी योजनाओं को क्रियान्वित कर मानव सेवा का इतिहास रचा था। किंतु जनवरी-फरवरी 2021 में जब ऐसा लगने लगा कि अब कोरोना लगभग देश से विदा हो गया है, तभी अचानक मार्च मास में फिर से एक बार कोरोना भयंकर आपदा के रूप में प्रकट हुआ और आज चारों तरफ फिर से त्राहि-त्राहि मची हुई है। इस भयावह स्थिति में सार्वदेशिक सभा के निर्देश पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 3 मई 2021 को एक साथ, एक समय पर दिल्ली की समस्त आर्य समाज एवं शिक्षण संस्थाएं, उनके अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यगण यज्ञ करेंगे। परिणाम स्वरूप कोरोना रोग का निवारण होगा और हम फिर से अपने भयमुक्त वातावरण में विधिवत जीवन जी सकेंगे। - सम्पादक

तन मन की शुद्धि साधन है- यज्ञ

वस्तुत: यज्ञ एक सर्वोत्तम चिकित्सा पद्धति है, यज्ञ के ऊपर अनेक शोध हुए हैं, जिनके परिणाम स्वरूप यह ज्ञात हुआ है कोई भी विषाणु जब मनुष्य को बीमार करता है तो यज्ञ में डाली हुई औषधियां सामग्री से उनका निवारण संभव होता है। यहां पर हम वैदिक उदाहरणों के साथ आपको बताना चाहते हैं की यज्ञ कितना सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा विज्ञान है। यज्ञ से मनुष्य के मन और तन दोनों की चिकित्सा संभव होती है। यज्ञ भावना अगर मन में आ जाए तो मनुष्य देव तुल्य बन जाता है और अगर मानव शरीर यज्ञ के प्रभाव में आ जाए तो सदा निरोग रहता है। यज्ञ चिकित्सा अपने आपमें अनोखी है, अनमोल है और सर्व हितकारी है।

अथर्ववेद और चरक शास्त्र में यज्ञ चिकित्सा

ईश्वर की अमृतवाणी वेद का संदेश है-

न तं यक्ष्मा अरुन्धते नैनं शपथो अश्नुते। यं भेषजस्य गुगुल्लोः सुरभिर्गन्धो अश्नुते। विष्वंचस्त स्माद यक्ष्मा म्रगाद अश्वा इवेरते।।

अथर्ववेद 11/38

अर्थात जिसके शरीर को रोग नाशक गूगल की उत्तम गन्ध आती है तो उसको राज्यक्षमा के रोग पीड़ा नहीं देते, दूसरे का शपथ भी नहीं लगता, उससे सब प्रकार के यक्ष्मा रोग शीघ्र हिरणों के समान कांपते हैं, डरकर भागते हैं।

आयुर्वेद के प्रमाणित ग्रंथ चरक में भी कहा गया है-

प्रयुक्तया यया चेस्टया राजयक्ष्मा पराजितः। तां वेद विहितामिष्टिमा रोग्यार्थी प्रयोजयेत।। *चरक 8,122*

जिस यज्ञ के प्रयोग से प्राचीन काल में राज्य यक्ष्मा रोग नष्ट किया जाता था, आरोग्य की कामना करने वाले मनुष्य को उसी वैदिक यज्ञ चिकित्सा का अनुष्ठान करना चाहिए। वेद और आयुर्वेद यज्ञ चिकित्सा को सर्वोत्तम बताते हैं।

स्थूल से सूक्ष्म अधिक शक्तिशाली

जैसा कि आप सब जानते हैं की स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म अधिक शक्तिशाली है तथा सूक्ष्म स्थूल में प्रवेश कर सकता है, पर स्थूल सूक्ष्म में नहीं। आटे में मिली हुई शक्कर के सूक्ष्म परमाणु पृथक करने को मनुष्य की स्थूल अंगुलियां असमर्थ है, पर चींटी का छोटा मुंह उनको सुगमता से अलग कर सकता है। सोने का एक छोटा टुकड़ा मनुष्य खा ले तो उस पर कोई प्रभाव न होगा, पर उसी टुकड़े को सूक्ष्म करके वर्क बनाकर के खाने से शरीर में शक्ति आएगी और यदि बहुत सूक्ष्म करके मतलब भस्म बनाकर खा ले तो पहले ही दिन में उसका चमत्कारी आभास होगा और कुछ समय में चेहरे पर उसका प्रभाव स्पष्ट दिखाई देगा।

यज्ञ के द्वारा पोष्टिक पदार्थों का सेवन

वर्तमान विज्ञान अभी इस सीमा तक उन्नति नहीं कर पाया किंतु प्राचीन वैज्ञानिक बताते हैं कि बीमारियों का उपाय केवल यज्ञ है। जिसके द्वारा पोस्टिक से पौष्टिक पदार्थ बदाम, शतावर, खीर, हलवा, किसमिस, छुवारे और अनेक अन्य सामग्री अधिक मात्रा में रोगी के शरीर में यज्ञ की वैज्ञानिक विधि से ही पहुंचा सकते हैं। उन वस्तुओं का सार भाग ही रोगी के भीतर पहुंचेगा जो अग्नि ने पूर्व से ही हल्का कर दिया है। अत: वह पाचन शक्ति पर तो किंचित मात्र भी प्रभाव नहीं डालेगा किंतु उसको और तीव्र करेगा तथा रक्त को ऐसा बलवान बनाएगा कि रोग पास ही नहीं आएंगे। इस पर भी उत्तम यह है की अधिक मात्रा में पहुंचकर बदहजमी होने का कोई भय नहीं क्योंकि वह प्राकृतिक ढंग से शरीर में प्रवेश करेगा।

शुद्ध एवं सन्तुलित मात्रा में ऑक्सीजन की प्राप्ति

कोरोना के कारण ऑक्सीजन की कमी और किल्लत से सभी रोगी परेशान है। यहां तक की अस्पताल और अस्पतालों को गति प्रदान करने वाली सरकार, डॉक्टर और बीमार रोगी त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। लेकिन यज्ञ के माध्यम से शुद्ध और संतुलित मात्रा में ऑक्सीजन की प्राप्ति संभव है

आप चाहे सारे वायुमंडल को हवन गैस से भर दे, प्रत्येक मनुष्य उसमें से उतना ही भाग ग्रहण करेगा जितनी उसे आवश्यकता होगी। जैसे उद्यान और पहाड़ तथा समुद्र किनारे की वायु में ऑक्सीजन भरा होता है, परिणाम से अधिक ऑक्सीजन भी शरीर को भारी हानि पहुंचा सकता है, पर क्या कभी किसी मनुष्य को पार्क में घूमने से ऑक्सीजन अधिक पहुंच जाने की शिकायत सुनी है, नहीं, क्योंकि कारण स्पष्ट है कि प्रकृति के भीतर ऐसा प्रबंध किया गया है जो मनुष्य को आवश्यकता से अधिक ऑक्सीजन साधारणतया ग्रहण

- शेष पृष्ठ 8 पर

वेद और शास्त्रों में अग्नियाँ

गतांक से आगे -

...घी इन्धन को दूसरे प्रकार की 'ज्वालारहित अग्नि' जैसे कोयला या कंडा की अग्नि जो लपलपाती, घटती बढ़ती ज्वालाओं के न होने के कारण शांत, शिथिल, स्थिर अग्नि में डालेगें तब इनका दहन होना या ज्वालाएं बढ़ना नही देखेगें बल्कि इनके सुगंध आदि शांतिदायक गुण बढ़ते जाते हैं और मूल गुण हजारों गुना बढ़कर, वाष्प यानी वायुरूप में परिवर्तित होकर हवा में चहुँओर फैलकर हजारों प्राणियों को नसिका द्वारा ग्रहण होकर लाभ ही लाभ देती हैं जिन्हे हम कुछ उचांई तक अपने आंखो से धुआँ के रूप में फैलते हुए देखते हैं। इसी प्रकार प्रणायाम, ध्यान योग एंव पर उपकार के मन विचार भावनायें लगाने पर यह शांत, सर्वआनदंदायक प्रवृतियां, लालसायें बढ़ती जाती हैं जिससे मन में शांति, प्रसन्नता बढ़ती है।.....

(स) समुल्लास 10 के तृतीय अथवा चतुर्थ पृष्ठ में लिखा है, '*यह निश्चय है कि अग्नि में इन्धन और घी डालने से बढ़ता जाता है, वैसे ही कामों के उपभोग से काम शांत कभी नहीं होता, किन्तु बढ़ता जाता है, इसलिये मनुष्य को विषयासक्त कभी न होना चाहिये।।3।।*'इस उदाहरण को स्वयं देखने हेतु यदि हम घी, इन्धन को 'ज्वालायुक्त अग्नि' में धीरे धीरे डालें तब देखेगें कि अग्नि की ज्वालायें बढ़ती रहती हैं। अब हम ऋषि के इस उदाहरण को मनुष्यों के सोच-विचार और कर्मों पर देखते हैं। उत्तेजना, उद्वेग, आवेग के कर्म जैसे काम, क्रोध, मद, लोभ, द्वेष एंव अन्य सभी बुरे विचारों प्रवृतियों में उद्यत, लिप्त, लगे रहने से यह बुराइयां, भावनाएं लालसायें, प्रवृतिया बढ़ती ही जाती हैं जब तक इन पर लगाम नहीं लगाया जाता है। अब हम ऋषि के इस उदाहरण को पुन: मनुष्यों के सोच विचार और कर्मों पर देखने हेतु, घी इन्धन को दूसरे प्रकार की 'ज्वालारहित अग्नि' जैसे कोयला या कंडा की अग्नि जो लपलपाती, घटती बढ़ती ज्वालाओं के न होने के कारण शांत, शिथिल, स्थिर अग्नि में डालेगें तब इनका दहन होना या ज्वालाएं बढ़ना नहीं देखेगें बल्कि इनके सुगंध आदि शांतिदायक गुण बढ़ते जाते हैं और मूल गुण हजारों गुना बढ़कर, वाष्प यानी वायुरूप में परिवर्तित होकर हवा में चहुँओर फैलकर हजारों प्राणियों को नसिका द्वारा ग्रहण होकर लाभ ही लाभ देती हैं जिन्हे हम कुछ उचांई तक अपने आंखो से धुआँ के रूप में फैलते हुए देखते हैं। इसी प्रकार प्रणायाम, ध्यान योग एंव पर उपकार के मन विचार भावनायें लगाने पर यह शांत, सर्वआनदंदायक प्रवृतियां, लालसायें बढ़ती जाती हैं जिससे मन में शांति, प्रसन्नता बढ़ती है। अर्थात साराशं में घी इन्धन का प्रचडं विध्वसंक अग्नि से मेल संपर्क कराने पर इनका भी विध्वसं यानी भस्म होता जाता है। जब इसी घी इन्धन का शातं अग्नियों से संपर्क, मेल कराने पर यह स्वयं हजारों गुना वायुरूप में बढकर चहुँओर सुगंध, औषधीय आदि लाभ बढ़ाती हैं।

(द) समुल्लास 11 में '*प्रश्न-ज्वालामुखी तो प्रत्यक्ष देवी है, सबको खा जाती है और प्रसाद देवे तो आधा खा जाती और आधा छोड़ देती है।..(करीब 5 लाइन के बाद)। उत्तर - नहीं। क्योंकि वह ज्वालामुखी पहाड़ में से आग ही निकलती है। उसमें पुजारी पोपों की विचित्र लीला है। जैसे बघार के घी के चमचे में ज्वाला आ जाती, अलग करने से वा फूँक मारने से बुझ जाती, थोड़ा सा घी को खा जाती, शेष छोड़ जाती, उसी के समान वह भी है। जैसे चूल्हे की ज्वाला में जो डाला जाय, सब भस्म होता, जंगल वा घर में आ लग जाने से सबको खा जाती है।* बघार, चूल्हे, जंगल, घरों आदि में लगी अग्नि 'ज्वालायुक्त' ही होती है। जो विध्वसंक यानी पदार्थों के मूल रूप एंव गुणों को छिन्न-भिन्न खंडित कर भस्म यानी समस्त शक्तियां नष्ट कर मुख्यतया: प्रत्यक्ष अनुभूति में गंधहीन, रगंहीन, स्वादहीन गैसें हवा में फैलती हैं। विज्ञान के अनुसार दहन के फलस्वरूप हवा में कार्बन डाईआक्साइड गैस, थोड़ा जल वाष्परुप में एंव उर्जा यानी गर्मी ज्वालाओं के रूप में फैलती हैं। जलते हुए लकड़ी के चूल्हे में उठती हुई लपटें यानी ज्वालाएँ भी 'ज्वालायुक्त अग्नि' होती है। इसी प्रकार के अग्नि में दिया, दीपक, लालटेन, पेट्रोमैक्स आदि को जला कर प्रकाश किया जाता है। इसी अग्नि में भोजन पकाने के लिए ठोस अज्वलनशील पदार्थों के बर्तन उपयोग किए जाते हैं जिससे उनका दहन न हो सके और आँच को आवश्यकतानुसार नियत्रित किया जा सके।

इसी 'ज्वालायुक्त अग्नि' में मुर्दों, लाशों को जला कर दहन यानी भस्मीभूत किया जाता है जिससे शव के मांस मज्जा के वाष्प यानी धुआँ हवा में न फैले जो अत्यधिक दुर्गधिंत होता है। इसीलिए शव के शत प्रतिशत सुनिश्चित करने करने लिए, शीघ्र दहन वाले पदार्थों का प्रचुर मात्रा में उपयोग किया जाता है जिससे शव जरा सा भी सुलगने न पाये अन्यथा सुलगने से वायु बहुत ही दुर्गधिंत होगी।

(ध) समुल्लास 12 में - "*उत्तर - यह तुम्हारी बात लड़कपन की है। प्रथम तो देखो, जहाँ छिद्र और भीतर के वायु का योग बाहर के वायु के साथ न हो तो वहाँ अग्नि जल ही नहीं सकता। जो इसको प्रत्यक्ष देखना चाहो तो किसी फानूस में दीप जलाकर सब छिद्र बंद करके देखो तो दीप उसी समय बुझ जायगा। जैसे पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्य आदि प्राणी बाहर के वायु के योग के बिना नहीं जी सकते, वैसे अग्नि भी नहीं जल सकता।*"इससे विदित होता है कि स्वामी दयानंद जी विज्ञान एंव प्रत्यक्ष प्रमाण में प्रयोग के द्वारा, यह जानते थे कि कोई पदार्थ बगैर हवा के दहन यानी ज्वलन नहीं हो सकती है। फानूसों, लालटेनों, पेट्रोमैक्सों आदि में हवा के अंदर घुसने के लिए नीचे कई छोटे-छोटे छिद्र तथा दहन के पश्चात कार्बन डाइआक्साइड आदि गर्म हवा के बाहर निकलने के लिए ऊपर छोटे छोटे छिद्र होना अति आवश्यक है, अन्यथा इन उपकरणों में तेलों का दहन नहीं हो सकेगा जिससे प्रकाशादि नहीं हो सकता है। समस्त अग्नियाँ एंव समस्त पदार्थ जड़ होते हैं जो अपने गुण एवं प्रभावों, व्यवहारों को परिवर्तित नहीं कर सकते हैं जिसे स्वामी दयानंद जी ने कई समुल्लासों में प्रश्नों के उत्तर में लिखा। इसी कारण उन्होंने अग्नि एंव पदार्थों को महिमामंडित करने वाली बातों को कहीं नहीं लिखा है।

विद्वतगण इस लेखनी पर अपनी शंका, राय एंव त्रुटियाँ अवश्य ही पत्र, ईमेंल, मोबाइल/व्हाट्सअप मेसेज से लिखने का कष्ट करें जिससे इसे अधिक उपयोगी बना सकूं और त्रुटियों का निराकरण भेजूगां।

- डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता(9451734531)

प्रथम पृष्ठ का शेष

शमशान घाटों पर नि:शुल्क हवन ....

आर्यसमाज का इतिहास रहा है कि कितनी भी विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में मानव सेवा की है, उसको शब्दों में व्यक्त नही किया जा सकता। पूर्वजों के कार्यों, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रेरणा को और एम.डी.एच. परिवार व महाश्य धर्मपाल जी के आशीर्वाद को स्मरण करते हुए, भयावह स्थिति हिम्मत और साहस के साथ घर से निकले। कहीं न कहीं अंन्तर्द्वंद्व चल रहा था, कि जो आज विषैले संक्रमित वातावरण में सेवा करने जा रहे हैं, वो अपने लिये, हमारे परिवार के लिए, साथियों के लिए, सही कदम है या नहीं? और हमें कुछ होता है, तो पीछे परिवार.....। पर जब मानव सेवा का संकल्प संगठन के द्वारा निश्चय किया गया हो तो कठिन से कठिन कार्य सरल और सुगम दिखता है। और हृदय, तन, मन पूरे आत्मविश्वास से सेवा कार्य करने के लिए और भी अधिक शक्ति के साथ संकल्पित हो जाता है। ऐसे में दल के साथी करन आर्य और दिल्ली सभा से विजय का साथ बहुत ही उत्साह देने वाला और शानदार था।

30 अप्रैल को हम पूर्वी दिल्ली के शाहदरा स्थित ज्वाला नगर शमशानघाट गए, हमें जानकारी मिली कि यहां निम्न व मध्य वर्ग के लोग अपने परिजनों का दाह संस्कार करने के लिए आते हैं, जब वहां सामग्री और पानी वितरण के लिए पहुंचे तो स्थिति जो सोची और सुनी थी वही मिली। घाट पर लगभग 20 के आसपास शव जल रहे थे और उनके आस पास और बाहर कोई उनका परिजन नहीं रुका हुआ था, जब जानकारी ली तो पता चला, की हर परिवार से 3-5 लोग आए थे, और मुखाग्नि दी और तुरंत चले गए। एक शव तो ऐसा था जिसको अग्नि भी शमशान वालों ने दी। इन सभी शवों पर हमने अग्नि की तपन में जैसे तैसे कम से कम 10-12 पैकिट सामग्री डाली और शाम होते तक 28-30 से अधिक शव लाईन में रखे हुए थे, और थोड़ी थोड़ी देर में शव आ रहे थे। उन शवों के साथ आये परिजनों को हमने विनम्रता से आग्रह किया कि हम आर्य समाज से आये हैं, और एम.डी. एच. के सौजन्य से नि:शुल्क सामग्री वितरित की जा रही है, उन्होंने इसे स्वीकार किया। चिताओं के बीच सामग्री डालते हुए तपन के कारण एक बार इतनी हालात खराब हुई कि कपड़े, और सामग्री के झोले, और तसले हाथों से पकड़े नहीं जा रहे थे, और ऐसे में हमारे बीच मे से भाग कर आने से बहुत अधिक सांस फूल गया, और सामान्य होने में लगभग 15 मिनट लग गए। हमें ऐसा करते देख कर बाहर खड़े लोगों ने आर्य समाज, आर्य वीर दल और एम.डी.एच. का धन्यवाद करते हुए कहा कि जहां लोग सामान्य दिनों में भी आने से डरते हैं, ऐसे में आप लोग किस मिट्टी के बने हो, कौन सी प्रेरणा से ये सेवा का कार्य कर रहे हो, क्या आपको संक्रमित होने का डर नहीं लग रहा, जब कोरोना का इतना व्यापक संक्रमण चल रहा है। शाम को एक नौजवान ने शुभकामनाएं और बराबर की उम्र का होते हुए भी प्रेरणा लेते हुए कहा कि काश आप जैसा हौसला मुझमें होता? अब उन्हें क्या कहें कि ये हौसला हमे हमारे आर्य पूर्वजों से विरासत में मिला है। जो कभी कभार डगमगा तो सकता है पर आत्म विश्वास के साथ दृढ़ और स्थिर होने में देर नहीं लगाता।

सेवा की इसी श्रृंख्ला में पश्चिमी दिल्ली के नांगल राया शमशान घाट, दिल्ली कैन्ट, सुभाष नगर शमशान घाट तथा पूवी दिल्ली के सीमापुरी शमशान भूमि एवं मौजपुर शमशान घाट पर भी हवन सामग्री एवं पीने के पानी की सेवा की गई। पूर्वी दिल्ली में बृहस्पति आर्य, करण आर्य एवं दिनेश आर्य ने सेवा की वहीं पश्चिम दिल्ली में दिल्ली सभा के मन्त्री सुखबीर सिंह आर्य एवं सम्वर्धक श्री राजबीर शास्त्री ने इस सेवा कार्य को आगे बढ़ाया। - ***बृहस्पति आर्य,***
महामन्त्री, आर्य वीर दल दिल्ली

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का पंचवर्षीय निर्वाचन सम्पन्न
श्री देवेन्द्र पाल वर्मा प्रधान एवं श्री पंकज जायसवाल मन्त्री निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का पंचवर्षीय चुनाव दिनांक 21 मार्च 2021 को सभा कार्यालय स्वामी नारायण भवन, लखनऊ में निर्वाचन अधिकारी श्री अखिलेश चंद्र गुप्ता तथा सहायक निर्वाचन अधिकारी श्री राम पाल शुक्ला के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। जिसमें चुनाव अधिकारी ने श्री देवेंद्र पाल वर्मा एवं उनकी टीम को सर्वसम्मति से निर्विरोध चुने जाने की निम्न प्रकार घोषणा की -

प्रधान - श्री देवेंद्र पाल वर्मा **मंत्री** - श्री पंकज जायसवाल। **कोषाध्यक्ष** - श्री अरविंद कुमार। **उप प्रधान** - श्रीमती गायत्री दीक्षित, श्री मनमोहन तिवारी, डॉ भानु प्रकाश आर्य, चौधरी रणबीर सिंह, श्री सिद्धार्थ कपूर। **उप मंत्री** - श्री सुनील कुमार, श्री विजयेन्द्र सिंह, श्री ज्ञानेंद्र सिंह मलिक, श्रीमती मीरा वर्मा, श्री राम स्नेही सिंह। **सहायक कोषाध्यक्ष** -श्री अजय श्रीवास्तव। **पुस्तकाध्यक्ष** - आचार्य दीपक, **सहायक पुस्तकाध्यक्ष** - श्री सुनील कुमार सिंह।

श्री देवेन्द्र पाल वर्मा (प्रधान)

श्री पंजक जायसवाल (मन्त्री)

श्री अरविन्द कुमार (कोषाध्यक्ष)

असम आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न
श्री महेन्द्र सिंह राजपूत प्रधान एवं श्री प्रभाकर शर्मा मन्त्री निर्वाचित

असम आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक अधिवेशन दिनांक 11 अप्रैल, 2021 को आर्यसमाज गुवाहाटी के प्रांगण में प्रात: 11 बजे सम्पन्न हुआ। इस निर्वाचन में सर्वसम्मति से **श्री महेन्द्र सिंह राजपूत जी को प्रधान**, **श्री प्रभाकर शर्मा जी को मन्त्री,** एवं **श्री कमल मुन्द्रा जी को कोषाध्यक्ष** निर्वाचित घोषित किया गया। इसके साथ अन्य पदों के निम्न महानुभाव निर्वाचित घोषित किए गए-

उप प्रधान - श्री ऋषिराम पोखरेल (उदालगुड़ी), श्री विजय आर्य (बरपेटा रॉड), श्री प्रदीप आर्य (गुवाहाटी), डॉ. अरुणा उपाध्याय (शिलांग)।

उपमन्त्री - श्री गणेश महतो (जोरहाट)। इसके साथ ही शेष अन्तरंग सभा सदों का भी चुनाव हुआ। पूर्व प्रधान श्री रामकान्त सिंहल जी को मुख्य उपदेष्टा एवं लोकेश आर्य जी एवं योगेश कुमार चौधरी जी को उपदेष्टा नियुक्त किया गया।

श्री महेन्द्र सिंह राजपूत (प्रधान)

श्री प्रभाकर शर्मा (मन्त्री)

श्री कमल मुन्द्रा (कोषाध्यक्ष)

समस्त निर्वाचित पदाधिकारियों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

सार्वदेशिक सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की अन्तरंग सभा एवं साधारण अधिवेशन सम्पन्न

वैश्विक महामारी कोरोना के बढ़ते प्रभाव के कारण ऑनलाइन हुई बैठक में जे.बी.एम. ग्रुप ऑफ कम्पनीज के चेयरमैन

श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी सर्वसम्मति से प्रधान मनोनीत

विश्व की समस्त आर्यसमाजों की सर्वोच्च शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की अन्तरंग सभा एवं साधारण सभा अधिवेशन दिनांक 24 अप्रैल, 2021 को सायं 5:00 बजे संघ के वरिष्ठ उप प्रधान श्री धर्मपाल गुप्ता जी की अध्यक्षता में ऑनलाइन रूप में जूम मीटिंग के माध्यम से सम्पन्न हुआ। बैठक का शुभारम्भ आचार्य जीव वर्धन शास्त्री जी द्वारा गायत्री मन्त्री एवं प्रार्थना उपासना मन्त्रों के वाचन से हुआ। सर्व प्रथम 3 दिसम्बर, 2020 को निवर्तमान प्रधान महाशय धर्मपाल जी के 98 वर्ष की आयु में हुए निधन पर शोक व्यक्त करते हुए दो मिनट का मौन धारण करके अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी। उप प्रधान श्री विनय आर्य जी ने बताया की महाशय धर्मपाल जी ने लम्बे समय तक संघ की सेवा की है और इसके कार्यों को फर्श से अर्श तक पहुंचाया है। बैठक का मुख्य विषय संघ के त्रैवार्षिक आय-व्यय एवं गतिविधियों वर्ष 2017-18, 2018-19 एवं वर्ष 2019-20 की प्रस्तुति तथा नए प्रधान का मनोनयन था। अन्तरंग सभा एवं अधिवेशन का संचलन करते हुए महामन्त्री श्री जोगेन्द्र आर्य (खट्टर) जी ने बताया कि सभा का गत साधारण अधिवेशन एवं त्रैवार्षिक निर्वाचन 13 जून, 2017 को हुआ था। जिसका कार्यकाल 12 जून, 2020 को हो चुका है। उन्होंने बताया कि सार्वदेशिक सभा की ओर सभी संस्थाओं से अपने निर्वाचन नवम्बर, 2020 तक कराने के लिए परिपत्र जारी किया था। उन्होंने आगे बताया कि किन्तु करोना काल अभी समाप्त नहीं हुआ है और चुनाव करा पाना सम्भव नहीं है। अत: नए प्रधान के मनोनयन का विषय यहां रखा गया है। उन्होंने इस विषय पर विचार रखने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के प्रधान एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के नार्थ ईस्ट के प्रभारी श्री दीनदयाल गुप्त जी से अपने विचार रखने का आग्रह किया। श्री दीन दयाल गुप्त जी ने महाशय धर्मपाल जी द्वारा दयानन्द सेवाश्रम संघ के लिए किए गए कार्यों का स्मरण करते हुए ऐसे ही आर्यसमाज को समर्पित, ऊर्जावान, सामर्थ्यवान, युवा प्रधान नियुक्त करने का प्रस्ताव करते हुए श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी का नाम प्रस्तुत करते हुए कहा कि जे.बी. एम. ग्रुप के चेयरमैन श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी इस पद के लिए सर्वथा उपयुक्त है। जिस प्रकार उन्होंने अपने व्यापार को दिन-दूनी रात चौगुनी तरक्की दी है, उसी प्रकार वे सेवाश्रम संघ को भी अपना आशीर्वाद देंगे।

संघ के वरिष्ठ उप प्रधान एवं बैठक के अध्यक्ष श्री धर्मपाल गुप्ता, श्री सुरेन्द्र आर्य (रोहिणी) एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने श्री दीनदयाल जी द्वारा प्रस्तुत नाम का समर्थन एवं अनुमोदन करते हुए श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी ने इस कार्यभार को ग्रहण करने और पद को ग्रहण करने का अनुरोध किया। श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी ने उपस्थित समस्त महानुभावों की भावनाओं, उनके विश्वास तथा दिए आदर का भाव रखते हुए प्रधान पद का दायित्व को सहर्ष स्वीकृति प्रदान की।

श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी ने उपस्थित सभी अधिकारियों एवं सदस्यों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज के सेवा कार्य का इतिहास बहुत पुराना रहा है, और अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, सेवा कार्यों के लिए ही बनाई गई आर्य समाज की एक इकाई है। 53 वर्ष पूर्व स्वर्गीय ओमप्रकाश त्यागी जी को भारत के प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने यह प्रेरणा दी, उस समय ओम प्रकाश त्यागी जी, पृथ्वीराज शास्त्री जी और श्री रामगोपाल शालवाले जी ने जिस एक

महर्षि दयानन्द जी के कर्मठ सिपाही, कट्टर आर्य श्री रामेश्वर दास जी आर्य के सुपौत्र एवं पं. फूलचन्द शर्मा 'निडर' जी, एक ऐसे अनथक कार्यकर्ता और आर्यसमाज के इतिहास के ऐसे पात्र जिसके साथ अनेक घटनाएं जुड़ी हुई हैं, के दौहित्र गत तीन पीढ़ियों से आर्यसमाजी, विचार टीवी नेटवर्क के चेयरमैन, आर्यसमाज के अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय आयोजनों में अथक सहयोगी

श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी

को प्रधान चुने जाने पर सब सदस्यों एवं अधिकारियों की ओर हार्दिक शुभकामनाएं

विचार को मन में रखकर इसकी स्थापना की थी, उसी विचार को आने वाले समय में माता प्रेमलता शास्त्री जी और अभी हाल ही में हमसे विदा हुए पूज्य महाशय धर्मपाल जी ने इस कार्य को प्रधान के रूप में आगे बढ़ाया, उनको मैं आज स्मरण करता हूं, आज महाशय जी के जाने के बाद आप सबने इस बड़ी जिम्मेदारी को मुझे सौंपने का जो विचार किया है, एक आर्य परिवार का सदस्य होने के नाते मैं इसे अपना कर्तव्य भी समझता हूं और आप सब की भावना को स्वीकार भी करता हूं

मैंने कुछ दिन पूर्व इसके सब कार्यों को जानने की और समझने की कोशिश की है। आर्य समाज का यह संगठन आदिवासी क्षेत्रों में अनुसूचित जनजातियों के कल्याण हेतु निरंतर कार्य कर रहा है। भले ही यह कार्य आम जनता की नजरों में ज्यादा ना आ पाए हों पर यह वास्तव में जमीन से जुड़ा हुआ कार्य है। आज के समय में भी जिन जगहों पर आना-जाना कठिन है, आज से 50 वर्ष पहले इन दुर्गम क्षेत्रों में साधन के अभाव में जाना और कार्य करना कितना दुष्कर रहा होगा, इसकी कल्पना करना भी कठिन है। सबसे पहले तो मैं उन सब को नमन करता हूँ जिन्होंने इस बाग को लगाया और इसे परिश्रम से सींचा। आज हम आसाम, नागालैंड, त्रिपुरा के क्षेत्र हों या मध्य प्रदेश, झारखंड, राजस्थान, छत्तीसगढ़ आदि के क्षेत्र हों, सब जगह सेवा कार्य कर रहे हैं।

इसी के साथ ही जो कार्यकर्ता और कर्मचारी संस्थाओं में विपरीत परिस्थितियों में भी काम कर रहे हैं उनका भी मैं आभार व्यक्त करता हूं और जो अधिकारी नि:स्वार्थ भाव से निरंतर इन कार्यों को गति देने के लिए कार्य कर रहे हैं उनका भी आभारी हूं। दयानंद सेवाश्रम संघ के अंतर्गत छात्रावासों, छोटे-बड़े विद्यालय, हॉस्टल, आई.ए.एस. की कोचिंग देने के लिए प्रतिभा विकास संस्थान और गरीब क्षेत्र में कार्य करने के लिए सहयोग परियोजना, आदिवासी छात्रों के लिए गवर्नमेंट एडिड हॉस्टल का निरंतर सफलतापूर्वक संचालन करना कोई सरल कार्य नहीं है, अब उन क्षेत्रों में भी आर्य समाज का कार्य फैलाने की संभावना ढूंढनी है जहां पर आज भी ओम का ध्वज नहीं पहुंचा है। हमें पूरा विश्वास है कि आने वाले वर्षों में हम उसमें भी सफल होंगे।

सन 2024-25 वर्ष हमारे लिए महत्वपूर्ण है। महर्षि दयानंद जी के जन्म के 200 वर्ष और आर्य समाज की स्थापना के 150वें वर्ष के भव्य आयोजन की तैयारी शुरू हो रही है। हमें इस जिम्मेदारी को निभाने के लिए भी अपने आपको तैयार करना है। हमें अपने हर क्षेत्र के लक्ष्य तय करने हैं और फिर उनको प्राप्त करने के लिए सारी शक्ति लगानी है आप सबके सहयोग और अनुभव से हम मिलकर इसको कर पाएंगे इसका मुझे पूरा विश्वास है ।

उन्होंने आप सब का आभार व्यक्त करते हुए अपनी संस्थाओं से जुड़े सभी साथियों को, कार्यकर्ताओं को और उनके परिवारों को कोरोना से सुरक्षित रहने के संबंध में निवेदन किया और कहा अपने विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों की सुरक्षा और उनके सभी कर्मचारियों की सुरक्षा हमारा प्राथमिक दायित्व है। हम सब बच के रहें ताकि आने वाले समय में और अधिक कार्य करने की क्षमता रख सकें।

इस अन्तरंग सभा एवं साधारण सभा अधिवेशन में प्रमुख रुप से सर्वश्री धर्मपाल गुप्ता (व.उप प्रधान), दीनदयाल गुप्त (कोलकाता, प. बंगाल), धर्मपाल आर्य (प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), विनय आर्य (उप प्रधान, एवं महामन्त्री, दिल्ली सभा), सुरेन्द्र आर्य (रोहिणी, दिल्ली), ओम प्रकाश गोयल (पानीपत), सुखवीर सिंह आर्य (दिल्ली), सत्यानन्द आर्य (दिल्ली), आचार्य शरत चन्द्र (लोहरदगा, झारखण्ड), वाचोनिधि आचार्य (गांधीधाम, गुजरात), आचार्य जीववर्धन (बांसवाड़ा, राजस्थान), शत्रुघ्न लाल गुप्ता (रांची, झारखण्ड), स्वामी धर्मानन्द सरस्वती (नवापारा, उडीसा), विश्वास सोनी (झाबुआ, म. प्रदेश), योगेश आर्य (कोषाध्यक्ष), श्री अशोक कुमार गुप्ता (सूरजमल विहार, दिल्ली), अरुण प्रकाश (दिल्ली), प्रकाश आर्य (मन्त्री, सार्वदेशिक सभा), सतीश आर्य (महामन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली), श्रीमती अंजलि आर्या (दिल्ली), श्री लोकेश कुमार आर्य (गुवाहाटी, असम), नीरज आर्य (दिल्ली), आचार्य दयासागर (छत्तीसगढ़) एवं श्री हर्ष प्रिय आर्य जी ने भाग लिया।

- जोगेन्द्र आर्य, महामन्त्री

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

Makers of the Arya Samaj : Maharishi Dayanand Saraswati

Mool Shankar

To the west ofIndia is the province of Gujarat. This contains many Indian States. One of them is known by the name of Dhrangadra. In it is a small town named Morvi. This is situated on the bank of the river Machhukahta.

In this town a boy named Mool Shankar was born in 1825. This boy afterwards came to be known as Swami Dayanand. Nobody suspected that one day he would become famous. Nor did anyone think that he would do so much to improve the conditions of the Hindus in India.

Mool Shankar's father was named Umba Shankar. He was a Brahmin ofa very high caste, but he was not poor as the Brahmins generally are. He had lands which brought him money, and sometimes he traded. He was also a State official. He used to collect revenue from the people of his town. To help him in his work he had under him clerks and sepoys. But he was a very strict Brahmin. He was very careful in performing those duties which were required of him as a Brahmin. He went to the temple every morning and evening. He was a worshipper of Shiva. Forall these things he was respected and trusted by the people of his town. His life was happy. He had a loving and devoted wife. She was very sweet and gentle. She loved her children as her own life. Whenever her husband was inclined to be harsh with the children, she did all she could to appease him.

Mool Shankarwas hardly five year old when his father took charge of his education He did not send him to school, but taught him at home. He was first taught the Sanskrit alphabet. Then he studied some holy Sanskrit books. Soon he learnt many *mantras* (holy verses) by heart. After a time he was taught the different forms of worship in which his father believed. When he was eight years old he was invested with the sacred thread. This was a day of great rejoicing. His father and mother felt very proud and happy on that day.

.....If a woman had no child, she offered prayers to her gods to bless her with one. Sometimes she said, "If! have a child I will dedicate it to the god." In this way many children were offered to the goddess Ganga. This was done in a very strange way. First of all, the child was taken by its parents to Hardwar. Then, standing on one of the steps of the ghat, the father or the mother threw the child into the stream. But luckily it was picked up by some priest who was already standing in the water. He then gave the child back to the parents in return for a little money. Thus the child's life was saved. But it did not always happen I ike this. Sometimes the child met with death. The Hindus were still worse in other things. They did not treat their women well. They thought they should not be sent to school. They believed that if women learnt to read and write they would come to grief So they remained illiterate. The Hindus were cruel to women in other ways, too. They thought them to be inferior to men. . .....

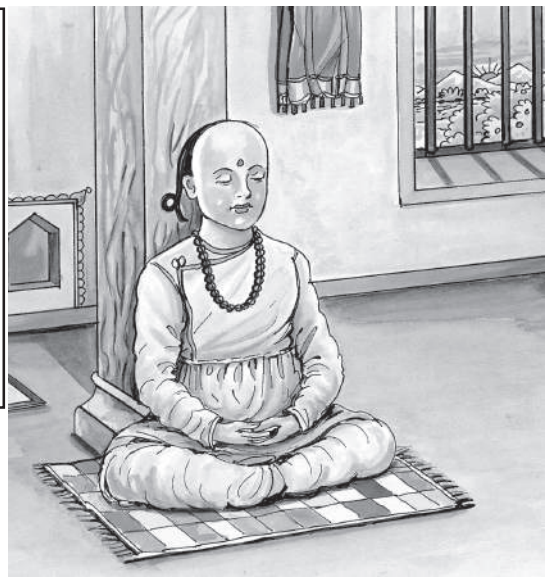

As mool Shankar's father was a devoted follower of the god Shiva, he was anxious for his son to follow in his footsteps. So he taught him many things about the god. All these had a great effect on the boy. Even at the age often he thought it the best thing in the world worship Shiva. For this purpose he often went with his father to the temple. There he offered his heart to the god. But his father was not yet satisfied. He wanted his son to observe a fast on every Shivratri day. That day was sacred to the god Shiva, and Mool Shankar's father considered it to be very important. He himself fasted on that day. He even asked his wife to do the same. But he felt most happy when he succeeded in making his son do the same.

In vain did the poor mother say that it was not good for a young boy to fast. The father would not listen to her. "This isjust the time," he *said,* "when Mool Shankar should learn to keep fast. The God who protectsrhe wholeuniverse"from harm, will surely guard Mool Shankar against all evil. He will be pleased with this young devotee of his and grant all his wishes." Mool Shankar's mother listened to all this and, finally, agreed to what her husband *said.*

To be continued.....
With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

पृष्ठ 2 का शेष

इसके अलावा मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारों और चर्च में पहले की तरह लोग जुटने लगे। नतीजा, भारत अब पूरी तरह पब्लिक हेल्थ इमरजेंसी की गिरफ्त में हैं। सोशल मीडिया कोविड की वजह से मारे गए लोगों के अंतिम संस्कार के फोटो और वीडियो से भरा पड़ा है। इन तस्वीरों में भीड़ भरे शमशान और कब्रगाह दिख रहे हैं। जिसे देखकर लेखिका अमृता प्रीतम की कविता की वो पंक्ति मन में ताजा हो रही हैं –

इस दुनिया में लगी है आग,
जो बच जाये बस उसके भाग।

अस्पतालों के बाहर मृतकों के रोते-बिलखते परिवार दिखाई पड़ रहे हैं। बेहाल मरीजों से लदे एंबुलेंसों की कतारें हैं। मुर्दाघरों में लाशों के लिए जगह नहीं है। कई बार एक बेड पर दो मरीजों को लिटाने की जरूरत पड़ रही है। अस्पतालों के कॉरिडोर और लॉबी में भी मरीजों का इलाज किया जा रहा है। अस्पताल के बैड, कोविड की दवाइयों, ऑक्सीजन, जीवनरक्षक दवाइयों और टेस्ट के लिए हाहाकार मचा हुआ है। दवाइयाँ ब्लैक मार्केट में बेची जा रही हैं और टेस्ट रिजल्ट में आने में कई दिन लग रहे हैं। एक वीडियो में आईसीयू के बाहर बैठी महिला बता रही है कि उसके बाप के मरने के 6 घंटे बाद उसे बताया और अब 3 दिन से लाश नहीं मिल रही है। रूह कंपाती ऐसी ना जाने कितनी विडियो सोशल मीडिया पर घूम रही हैं। जिन्हें देखकर पता नहीं चल पा रहा है कि इन मौतों का जिम्मेदार कौन है कोरोना या समाज? क्योंकि हमारे अगल-बगल के देशों श्रीलंका, चीन, पाकिस्तान, बांग्लादेश नेपाल हो या म्यांमार वहां स्थिति नियंत्रण में है। शायद इसका जवाब राजनेताओं की विशाल रैलियों में उठ रही भुजाओं और सत्ता बदलते नारों के बीच दबकर रह गया। – ***सम्पादक***

प्रथम पृष्ठ का शेष

बालवाडियों, छात्रावासों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं मानव सेवा में संलग्न समस्त मत-मतान्तरों को भी आगे आकर आर्यसमाज के अधिकारयों, सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं के साथ हजारों-लाखों नहीं अपितु करोड़ों की संख्या में एक साथ, एक ही समय – 3 मई को प्रात: 9 बजे अपने-अपने स्थानों पर कोरोना से बचाव के लिए जारी दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए इस महामारी से प्राण गवां चुके लोगों की आत्मा को श्रद्धांजलि देते हुए रोग निवारण यज्ञ करने का निवेदन किया।

उन्होंने वेद के सन्देश **'वसुधैव कुटुम्बकम'** – सारा विश्व एक परिवार है, की भावना व्यक्त करते हुए न केवल मानवजाति अपितु विश्व के सकल प्राणियों के कल्याण और सुख, स्वास्थ्य की कामना करते हुए **'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया'** का उदात्त उदाहरण प्रस्तुत करते हुए आग्रह किया कि सभी महानुभाव अपने-अपने स्थान, घरों, दुकानों, मन्दिरों, आर्यसमाजों, गुरुकुलों, विद्यालयों, प्रतिष्ठानों, छात्रावासों, आवासीय सोसायटीयों जहां भी आप रह रहे हों, सेवा कर रहें हो वहां अपने परिवार/ सहयोगियों के साथ **3 मई, 2021 को प्रात: 9 बजे रोग निवारण यज्ञ** का अवश्य ही आयोजन करें और वैदिक मन्त्रों का गुंजायमान करते हुए आध्यात्मिक तरंगों और औषधियुक्त धूम्र से संसार को कष्ट प्रदान करने वाले विषाणुओं को समाप्त करने में सहयोगी बनें।

संस्कृत वाक्य प्रबोध

क्रयविक्रयप्रकरणम्

गतांक से आगे –	संस्कृत	हिन्दी
185.	अस्य किम्मूल्यम्?	इसका क्या मूल्य है?
186.	पञ्च रूप्याणि।	पांच रुपये।
187.	गृहाणेदं वस्त्रं देहि।	लीजिये पांच रुपये, यह वस्त्र दीजिये।
188.	अद्यश्वो घृतस्य कोऽर्घ:?	आजकल घी का क्या भाव है?
189.	मुद्रैकया सपादप्रस्थं विक्रीणते?	एक रुपया से सवासेर बेचते हैं।
190.	गुडस्य को भाव:?	गुड़ का क्या भाव है?
191.	द्वाभ्यामानाभ्यामेकसेटकमात्रां ददति।	दो आने से एक सेर देते हैं।
192.	त्वमापणं गच्छ, एलामानय।	तू दुकान पर जा, इलायची ले आ।
193.	आनीता, गृहाण।	ले आया लीजिये।
194.	कस्य हट्टे दधिदुग्धे अच्छे प्राप्नुत:?	किसकी दुकान पर दूध और दही अच्छे मिलते हैं?
195.	धनपालस्य।	धनपाल की।
196.	स सत्येनैव क्रयविक्रयौ करोति।	वह सत्य ही से लेनदेन करता है।
197.	श्रीपतिर्वणिक्कीदृशोऽस्ति?	श्रीपति बनियां कैसा है?
198.	स मिथ्याकारी।	वह झूठा है।
199.	अस्मिन्संवत्सरे कियांल्लाभो व्ययश्च जात:?	इस वर्ष में कितना लाभ और खर्च हुआ?
200.	पंच लक्षाणि लाभो लक्षद्वयस्य व्ययश्च।	पांच लाख रुपये लाभ और दो लाख खर्च हुए।
201.	मम खल्वस्मिन् वर्षे लक्षत्रयस्य हानिर्जाता।	मेरे तो इस वर्ष में तीन लाख की हानि हो गई।
202.	कस्तूरी कस्मादानीयते?	कस्तूरी कहां से लाई जाती है?
203.	नेपालात्।	नेपाल से।
204.	बहुमूल्यमाविकं कुत आनयन्ति?	बहुमूल्य दुशाले आदि कहां से लाते हैं?
205.	कश्मीरात्।	कश्मीर से।

क्रमश: – साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

हे ईश्वर! इस महान विध्वंशक रोग से शीघ्र दुनिया की रक्षा करें
दिवंगत आत्माओं को आर्यसमाज की ओर से अश्रुपुरित श्रद्धांजलि

शोक समाचार

भजनोपदेशक पं. दिनेश दत्त जी का निधन

भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद के विख्यात भजनोपदेशक पंडित दिनेश दत्त जी का 24 अप्रैल, 2021 को प्रात: 3:30 बजे हार्टअटैक के कारण आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।
उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 26 अप्रैल, 2021 को सम्पन्न हुई।

श्रीमती अमिता सपरा का निधन

आर्यसमाज रोहिणी सैक्टर-7 के संस्थापकों में से एक वरिष्ठ सदस्या माता श्रीमती अमिता सपरा जी का दिनांक 25 अप्रैल, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

श्रीमती श्वेता मलिक जी का निधन

आर्यसमाज हनुमान रोड द्वारा संचालित रघुमल आर्य कन्या सी सै स्कूल में कार्यरत गणित विषय की अध्यापिका श्रीमती श्वेता मलिक जी का दिनांक 25 अप्रैल, 2021 को कोरोना संक्रमण से निधन हो गया। इससे पूर्व गत शुक्रवार को ही उनके पतिदेव का भी कोरोना संक्रमण से निधन हो गया था।

श्री जसवन्त कपूर जी का निधन

आर्य समाज संदेश विहार, पीतमपुरा दिल्ली के पूर्व कोषाध्यक्ष एवं वर्तमान में संरक्षक श्री जसवंत कपूर जी का दिनांक 26 अप्रैल, 2021 को प्रात: 3 बजे के आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।
उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा स्वामी विष्वंग जी के सान्निध्य में जूम मीटिग पर 29 अप्रैल, 2021 को सम्पन्न हुई।

श्री श्रीपाल सिंह आर्य जी का निधन

रामगली आर्य समाज हरि नगर घंटा घर के मन्त्री, विद्वान पुरोहित तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के विशेष आमन्त्रित सदस्य श्री श्रीपाल सिंह आर्य जी दिनांक 22 अप्रैल, 2021 को कोरोना संक्रमण के कारण आकस्मिक निधन हो गया।

श्री बलदेव राज सेठ जी को पुत्रशोक

आर्य समाज न्यू मुल्तान नगर वरिष्ठ सदस्य एंव दिल्ली सभा द्वारा संचालित लाला दीवान चन्द स्मारक धमार्थ अस्पताल के कोषाध्यक्ष एवं आर्यनेता श्री बलदेव राज सेठ जी के सुपुत्र श्री अजय सेठ जी का 26 अप्रैल को आकस्मिक निधन हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

स्वामी सेवानन्द जी का निधन

आर्य संन्यासी, दानवीर, पूर्व सरपंच स्वामी सेवानन्द जी (पूर्व नाम श्री जगदीश प्रसाद आर्य) का 27 अप्रैल, 2021 को 87 वर्ष की आयु में आकस्मिक देहांत हो गया। उनका अन्तिम संस्कार वैदिक रीति के साथ ग्राम सैद अलीपुर मे संपन्न हुआ। स्वमीजी गौ रक्षा आंदोलन से भी जुड़े रहे।

श्री मनोहर लाल तलूजा जी का निधन

आर्य समाज शकूरबस्ती रेलवे रोड के मंत्री एवं अनुभवी आर्य नेता श्री मनोहर लाल तलूजा जी का दिनांक 24 अप्रैल, 2021 को आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

डॉ. सीमा श्रीमाली जी का निधन

आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर की स्नातिका एवं पद्मिनी आर्य कन्या गुरुकुल चित्तौडगढ़ (राज.) की संचालिका, वैदिक विदुषी सुश्री डॉ. सीमा श्रीमाली जी का दिनांक 29 अप्रैल, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

आचार्य ओमदत्त जी का निधन

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री शोभाराम प्रेमी जी के सुपुत्र, वैदिक विद्वान आचार्य डॉ. ओमदत्त शर्मा जी का दिनांक 30 अप्रैल, 2021 कोरोना संक्रमण से आकस्मिक निधन हो गया। उन्होंने चारों वेदों की ऑडिया सीडी बनाकर जन साधारण को श्रवणार्थ उपलब्ध कराई थी।

श्री मदन मोहन सलूजा जी का निधन

आर्यसमाज पंजाबी बाग विस्तार के पूर्व प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के संरक्षक, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व अधिकारी, महात्मा जगदीश्वरानन्द आरोग्याश्रम मेरठ के अधिष्ठाता, यज्ञ प्रेमी श्री मदन मोहन सलूजा जी का 27 अप्रैल, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

श्री आनन्द कुमार आर्य जी को पत्नीशोक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व उप प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के पूर्व प्रधान एवं आर्य समाज टाण्डा के प्रधान श्री आनंद कुमार आर्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती मीना आर्या जी का दिनांक 27 अप्रैल, 2021 की प्रात: लखनऊ में निधन हो गया। वे काफी समय से अस्वस्थ चल रहीं थी।

स्वामी शरणानन्द जी का निधन

वैदिक विद्वान, पूज्य संत स्वामी शरणानंद जी महाराज दडौली आश्रम रेवाड़ी का दिनांक 23 अप्रैल, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। स्वामी जी महाराज वैदिक विद्वान ही नहीं अपितु महान साधक भी थे।

भजनोपदेशक ओम प्रकाश वर्मा जी का निधन

आर्य समाज की महान विभूति, विश्व विख्यात भजनोपदेशक पंडित श्री ओमप्रकाश वर्मा जी का दिनांक 25 अप्रैल, 2021 को लगभग 65 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। उनक अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

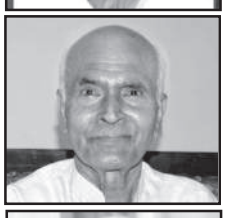

आचार्य विष्णुमित्र मेधार्थी जी को पितृशोक

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य विष्णुमित्र मधार्थी जी के पूज्य पिता श्री सुखलाल आर्य जी का दिनांक 27 अप्रैल, 2021 को दोपहर 12 बजे लगभग 85 वर्ष की आयु में वैश्विक महामारी कोरोना संक्रमण से निधन हो गया।

श्री आचार्य रामपाल शास्त्री जी का निधन

आर्य जगत के मूर्धन्य वैदिक विद्वान, राजस्थान आर्य वीर दल के आचार्य श्री रामपाल जी शास्त्री का दिनांक 28 अप्रैल, 2021 की प्रात: कोरोना की बीमारी से लड़ते हुए निधन हो गया है।

आचार्य बुद्धदेव जी का निधन

वैदिक विद्वान, गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली के स्नातक एवं गुरुकुल नरसिंहनाथ उडीसा के संचालक एवं आचार्य श्री बुद्धदेव जी का दिनांक 28 अप्रैल, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

श्रीमती अशरफी देवी जी का निधन

सौ गांव की एक समाज - आर्यसमाज बंबा कोठी की संरक्षिका आचार्य यशपाल शास्त्री जी की सबसे छोटी दादीमा श्रीमती अशरफी देवी जी का दिनांक 27 अप्रैल, 2021 को लगभग 103 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया।

श्री रामपाल पांचाल जी को पत्नीशोक : आर्यसमाज रोहतास नगर शिवाजी पार्क, शाहदरा के पूर्व प्रधान, संचालक एवं दिल्ली सभा के अन्तरंग सदस्य श्री रामपाल पांचाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती उषा रानी जी 76 वर्ष की आयु में का 27 अप्रैल को प्रात: 7 बजे निधन हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

श्री अजय श्रीवास्ताव जी की बहन का निधन - आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के सह कोषाध्यक्ष श्री अजय श्रीवास्तव जी की बड़ी बहन का कोरोना संक्रमण के कारण दिनांक 25 अप्रैल, 2021 को लखनऊ में निधन हो गया।

श्री शशि कमल पांडे जी का निधन - आर्य समाज रानी मंडी अतरसुइया प्रयागराज के पुराने सदस्य श्री शशि कमल पांडे (मुन्ना) जी का 25 अप्रैल 2021 को निधन हो गया। इनके ही परिवार एवं आर्यसमाज के सदस्य श्री सुशील सुनील कुमार पांडे जी की पत्नी श्री मिथिलेश पांडे जी का भी 18 अप्रैल, 2021 को निधन हो गया था।

श्रीमती मुन्नी देवी जी का निधन - आर्य समाज आर्यमगढ़ (आजमगढ़) के मंत्री एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. के अन्तरंग सदस्य श्री संतोष मौर्य जी के छोटे भाई की धर्मपत्नी श्रीमती मुन्नी देवी जी का दिनांक 27 साथ 2021 को निधन हो गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 26 अप्रैल, 2021 से रविवार 2 मई, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 29-30/04/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 28 अप्रैल, 2021

पृष्ठ 3 का शेष

नहीं करने देगा। इसी प्रकार हवन में उत्पन्न गैस से मनुष्य अपनी आवश्यकता के अनुसार ही उन पदार्थों को ग्रहण करेगा। इसलिए हवन यज्ञ द्वारा ही हम पौष्टिक भोजन निर्मल से निर्मल शरीर में पहुंचा सकते है।

हवन यज्ञ से शुद्ध ऑक्सीजन युक्त वायु अधिक मात्रा में मिलती है और उस वायु में प्रकृति ने रेडियम का सा परिमाण बना दिया है जिससे विषाणु, या घाव सूख सकें। तो यज्ञ चिकित्सा द्वारा हम हर समय वायु उत्पन्न कर सकते हैं जिससे रोग ठीक हो सकते हैं ।

यज्ञ की सुगन्धित वायु से होते हैं, फेफड़े मजबूत

फेफड़ों में श्वाश को लेकर यज्ञ पर शोध द्वारा यह निश्चित किया गया है कि साधारण रूप में एक युवा मनुष्य के फेफड़ों में 230 वर्ग इंच वायु रहती है, जिसमें से केवल 20 से लेकर 30 वर्ग इंच श्वास छोड़ने पर बाहर निकलती है और 200 वर्ग इंच जमा रहती है और

प्रतिष्ठा में,

यदि जोर से गहरी सांस ली जाए तो 130 वर्ग इंच तक वायु बाहर निकाल सकते हैं। जितनी अशुद्ध वायु बाहर निकलती है उतनी ही शुद्ध वायु भीतर पहुंचती हैं, इसी अनुपात से रक्त शुद्ध होता है और जठराग्नि तीव्र होकर पाचन शक्ति को बढ़ाती है तथा भोजन पचकर रक्त तथा बल की वृद्धि होती है।

यज्ञ चिकित्सा से प्राप्त आरोग्यता- स्थाई

यह मनुष्य का स्वभाव है कि जिस स्थान पर सुगंध आती है वहीं वह गहरी श्वास लेता है और बार-बार लंबी गहरी श्वास लेता रहता है। किसी उद्यान में जहां हारसिंगार अथवा केवड़े का फूल खिल रहे हों वहां खड़े होकर हमें अच्छा लगता है, जिस स्थान पर हवन यज्ञ होता है, वहां पर भी मंद-मंद सुगंध फैलती है अत: स्वभाव से ही गहरी श्वास ली जाती है। जितनी देर रोगी यज्ञ के स्थान पर रहता है, बार-बार गहरी श्वास लेकर वाटिका से भी अधिक ऑक्सीजन युक्त वायु से अपने फेफड़ों को भरता है। जिससे फेफड़ों के रोग इतनी शीघ्रता से सूखते हैं जितने किसी अन्य विधि से संभव नहीं। साथ ही वायु प्राकृतिक ढंग से पहुंचकर आरोग्यता प्रदान करती है, यज्ञ का प्रभाव स्थाई होता है। इसलिए देखा जाता है कि जो रोगी यज्ञ चिकित्सा से एक बार आरोग्य को प्राप्त करता है वह सदा सर्वदा आरोग्य ही रहता है।

यज्ञ चिकित्सा से मरते हैं- किटाणु

आधुनिक चिकित्सक किटाणु मारने पर बल देते हैं और अभी तक बिना शरीर को हानि पहुंचाए कीटाणुओं को मारने वाला कोई टॉनिक इजाद कर सकने की एलोपैथिक की कमी को स्वीकार करते हैं। साथ ही कैविटी मरने से आरोग्यता का अनुमान करते हैं। आयुर्वेद का कहना है कि रक्त बहाने वाली नसों के बंद होने से रोग होता है और उन नसों को पुन: खोलने से ही आरोग्यता मिल सकती है। शुद्ध ऑक्सीजन युक्त वायु लघु और पौष्टिक भोजन पर दोनों ही पद्धतियों में बल दिया जाता है। गंभीरता से विचार करने पर पता चलता है कि यज्ञ ही एक ऐसा साधन है जो कीटाणुओं को मार सकता है, कैविटी को भी भर सकता है, ऑक्सीजन वायु भी दे सकता है, उसकी कारक भोजन पाचन क्रिया पर बिना भार डालें शरीर में पहुंच सकता है और जीवन शक्ति को तथा रक्त संचार को बढ़ाकर रक्त बहाने वाली नसों को खोल सकता है साथ ही यज्ञ संबंधी मंत्रों पर विचार करने से मन की शक्ति भी बढ़ती है और आरोग्यता प्राप्त होती है।

आओ, 3 मई को यज्ञ करें,
कोरोना को भस्म करें।

- आचार्य अनिल शास्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह